Page No.
Date : / /

काण्ट

समीक्षा वाद / कॉपर निकस क्रान्ति

काण्ट दुनिया का महान्‌ दार्शनिक था जो पूर्णत: अनुशासन बद्ध था काण्ट सबसे ज्यादा प्रभावित था न्यूटन से और उल्फ से

→ लैबनिज, उल्फ, न्यूटन तीनो बुद्धिवादी दार्शनिक थे और काण्ट को यह लग रहा था लैबनिज, उल्फ, न्यूटन सही है। लैबनिज व न्यूटन का प्रभाव ज्यादा दिखाता है। और जब किसी नये दर्शन की बात की जाती थी तो काण्ट → लैबनिज को → न्यूटन की → नजरिये से देखता था। लेकिन जब उसने

→ ह्युम → के → संशयवाद को पढ़ा काण्ट तब वह सोचने लगा तब उसने कहा। क्या वास्तव मे ऐसे होता है।

लैबनिज ⇌ (काण्ट) ⇌ ह्युम

काण्ट दोनो से प्रभावित हुआ तो उसने लैबनिज को ह्युम की आँखो से देखा ह्युम को लैबनिज की आँखो से देखा दोनो मे समन्वय कर दिया

Scanned with CamScanner

Page No.
Date: / /

जो समन्वय किया उससे क्रान्ति हो गयी उसी क्रान्ति को कॉपरनिकस क्रान्ति कहते है। क्यों कि कपरनिकस भूगोल वेत्ता जिसने बताया कि सौर मण्डल हमारी पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाती है हम पहले जानते थे कि पृथ्वी का चक्कर सूर्य लगाता है। मान्यता थी पहले की जो मान्यता थी। कॉपरनिकस ने बदल दिया। काण्ट ने भी भी दर्शन के क्षेत्र मे वैसा ही किया इसलिए काण्ट के समीक्षावाद को कहा जाता है। कॉपरनिकस क्रान्ति काण्ट कहता है ज्ञान के लिए बुद्धि व अनुभव दोनों जरूरी है।

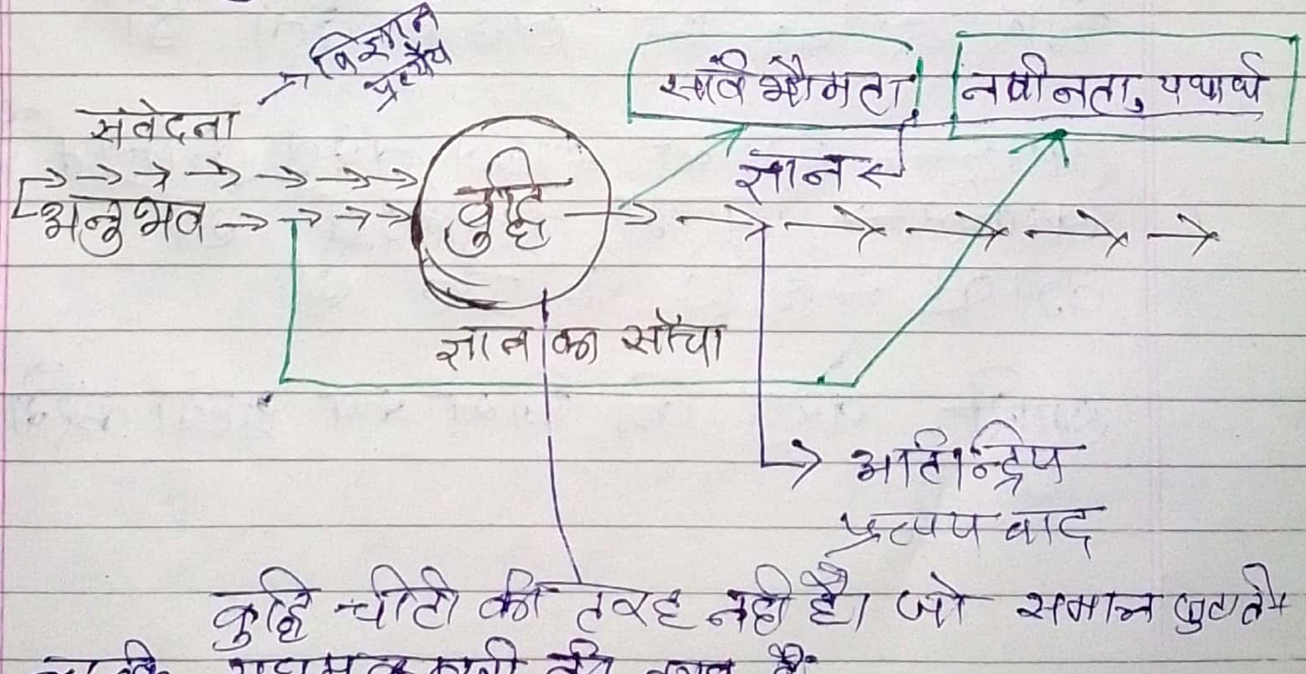

बुद्धि चींटी की तरह नहीं है। जो समान जुटाते बल्कि मधुमक्खी की तरह है

Page No.
Date : / /

काण्ट ने कहा हमारी बुद्धि संवेदनो को लेती है। और ज्ञान मे मन्वर्त करती है

हमारी बुद्धि चीटियो की तरह नही है जिसका काम है। सामान जुटाना

हमारी बुद्धि मधुमाक्यियो की तरह है। जो अनेको फूलो के रस के सहद में बदल देती है।

वह मकड़ियों की तरह नही है जो अपने अन्दर जालो का निर्माण करती है।

काण्ट ने मधु मक्खी की तरह क्यो कहा क्यो कि हमार बुद्धि संवेदना को ग्रहण करती है और ज्ञान मे बदल देती है।

लाक → हमारा स्थूल वस्तु केन्द्रित है।
बरकले → आत्म केन्द्रित है।
काण्ट → बुद्धि केन्द्रित है

हमारी वस्तु को जिस रूप ग्रहण करते

कान्ट ने कहा प्रकृति से संवेदना आ रही है वो कैसी है मैं नही जानता हमारी बुद्धि उसे जिस रूप ग्रहण करेगी मै उसी रूप मे उसको जानूगा

जैसे ब्लैक बोर्ड ब्लैक है सॉइंस का नियम क्या कहता है। सनरेज मे बहुत कलर है उसे मै नही जानता लेकिन हमारी बुद्धि उसे जिस रूप मे ग्रहन करेगी मै उसे उसी रूप मे जानूंगा

हमारी प्रकृति का निर्माण करती है।
इसे ही कॉपर निकस क्रान्ति कहते

कान्ट कहता है।– मै वस्तुओ को नही जानता वस्तुए कैसी है हमारी बुद्धि प्रकृति से आने वाली संवेदनाओ को जिस रूप मे ग्रहण करेगी हम उसे उसी रूप में जानेगे

बुद्धि प्रकृति का निर्माण करती है। जज का कार्य करती है।

अनुभव ← बुद्धि ⟹ स्वभाव

Page No.
Date: / /

कान्ट ने कहा ज्ञान का आरम्भ अनुभव से होता है। लेकिन ज्ञान की उत्पत्ति अनुभव से नही होती

बुद्धि के बिना सम्वेदना अन्धी है, संवेदना के बिना बुद्धि निष्क्रिय है।

ईंट मिट्टी है लेकिन क्या इट मिट्टी का रूप ले पायेगा - नही साँचा। ईट का निर्माण करता है। तो क्या मिट्टी के बिना साँचा कार्य कर पायेगा - नही।

प्र० - कान्ट से पूछा गया बुद्धि ज्ञान संवेदना मे ग्रहण करती है तो कान्ट ने कहा है। क्या

Page No.
Date: / /

आदर्शवाद का अर्थ ⇒

आदर्शवाद पाश्चात्य दर्शन की प्राचीन विचारधारा है। ज्ञान की किरण भारत के बाद सबसे पहले यूनान (ग्रीक) यूनान (ग्रीक) पाश्चात्य दर्शन की गुरुस्थली मानी जाती है।
पश्चिमी जगत में यूनानी दार्शनिक थेल्स सबसे पहले व्यक्ति थे
→ जिन्होंने ब्रह्माण्ड की रचना के विषय में अपना तर्क प्रस्तुत किया
इसके बाद इटली के दार्शनिक-
जैनोफीनीज ने अद्वैतवादी विचार प्रस्तुत प्रस्तुत किए। इनके बाद
सुकरात का नाम आता है।

सुकरात भी आध्यात्मिक विचार धारा के व्यक्ति थे परन्तु वे अपने इन विचारों को फुटकर रूप में यत्र-तत्र प्रकट करने तक सीमित रहे। उनके बाद पश्चिमी जगत में उनके शिष्य प्लेटो (427-347) का प्रादुर्भाव हुआ
प्लेटो यूनान के राजघराने के राजवंश से बड़े ठाट बाट से रहते थे।
शरीर सौष्ठव और मान प्रतिष्ठा के प्रति सचेत थे, परन्तु उनका दार्शनिक चिन्तन सुकरात के आध्यात्मवादी दर्शन से प्रभावित था
प्लेटो आत्मा परमात्मा के स्वरूप को स्वीकारते थे।

Scanned with CamScanner